श्री भद्रावती पार्श्वनाथाय नम

श्री जिन दत्त कुशल गुरुदेवाय नम

भारत के स्वप्न देव

श्री भद्रावती पार्श्वनाथ का परिचय

(यतिवर्य प श्री महेन्द्र सिंह जी उदोत [illegible] द्वारा लिखित व मुद्रित पुस्तक का संशोधित व विभिन्न स्तोत्रों सहित प्रकाशन)

प्रकाशक फोन न. ३०

श्री भद्रावती जैन श्वेताम्बर मण्डल

मु भद्रावती

स्टेशन-माढक (४४२९०२)

जिला-चन्द्रपुर (महाराष्ट्र)

संशोधक

श्री मिलापचन्द गोलछा

C/o सरदारमल पातुदान गोलछा

नया माधुपुरा, अहमदाबाद-३८०००४

सन्	वि संवत	वी	द्वितीय आवृत्ति
१९८५	२०४२	२५१२	६००

विशेष—नोट

इस पुस्तक में पु. गुरुदेव श्री शांतिसुरीजी के बावत छपे विवरण में श्रीमान नेमीचन्दजी बछावत ने यह सुधारा छपवाया हैं पु, गुरुदेव एक हरे रंग की करीब ५ इंच की श्री पार्श्व-नाथ जी की मूरती व एक स्फटिक के करीब ७ इंच समचौरस श्री जिन कुशल गुरुदेव के चरण रखते थे उसकी मै व श्री हीराचन्द जी गोलछा जब भी गुरुदेव के पास जाते तब पुजा करते थे। वह मूरती किस चीज की बनी थी मालुम नही पर उसका पक्षालन के लिए जिस किसी तासक में रखते वह हरे रंग की दिखने में लगती थी मूरती उठा लेने के बाद वह वापस अपने रंग की दिखने लगती थी। ये दोनो वस्तुए मैंने मांगी थी पर पु. गुरुदेव के स्वर्गागमन बाद वह कहा गई मालुम नहीं।

पु. गुरुदेव ने मेरे फलोदी मे बनाए श्री नेमिनाथजी के मन्दिर के बहुत पहले यानि स. १९८३ में ही माउण्ट आबु में केकर्डी हाउस में मुझे वासक्षेप देकर कहा था कि तेरे हाथ से श्री नेमी नाथजी का मन्दिर बनेगा। उसकी मूरती बनारस से मिलेगी। और मै वासक्षेप भेजुगा वही वासक्षेप प्रतिष्ठा पर मूरती पर डालना स. १९९९ में माह सुद ११ को प्रतिष्ठा थी पर वासक्षेप आया नहीं तब उस टाइम गणि श्री रंग विमल जी ने कहा कि वासक्षेप आया नही मै मेरे पास से वासक्षेप डालकर प्रतिष्ठा कराढुंगा मुझे पुरा विश्वास था कि वासक्षेप जरूर आएगा वैसा ही हुआ और प्रतिष्टा के ठीक थोडी देर पहले सुबह ७ बजे गुरुदेव के हाथ की लिखी चिट्ठी के साथ एक्सप्रेस डीलेवरी से वासक्षेप आया और वही मूरती पर डाला गया। वह चीठी आज भी मेरे पास पड़ी है।

ता. २६-१२-१९८४

— मिलापचन्द गोलछा
अहमदाबाद

अनुक्रमणिका

नाम	पृष्ठ
श्री योगिराज शांतिमूर्ति जी बाबत श्री नेमीचंदजी बछावत का निवेदन	?
भेंट समर्पण पुजा पृष्ठ, प्रस्तावना	१ से ८
जैन तीर्थ महावती परिचय	९ से ३९
मानव धर्म व प्रभु प्रार्थना	४० से ६०
मन को शिक्षारण व सज्झाय	६१ से ८९
जिन दर्शन महिमा फल	८० से ८१
चैत्य वंदन करने की विधी	८१ से ९३
प्रभु जी की स्तुति व प्रार्थना, पद	९४ से १२१
रत्नाकर पच्चीसी	१२१ से १२४
नेमनाथजी की लावणी	१२५ से १२७
वसी करण मंत्र- व भावना	१२७ से १३४
मुक्ति जाने की सीढ़ियाँ वगैरा	१३५ से १३८
तृतीय खंड-सात व नव स्मरण	१३९ से
नम्र निवेदन,	१४०
पार्श्व नाथ जी का बड़ा स्तोत्र	१४३ से १४५
सप्त स्मरणम्-नव स्मरणम्	१४५ से १७६
बड़ी शांति	२०९ से २१२
छंद	१७७ से १८२
चार शरणा	१८२ से १८३
ओलायण वृद्ध स्तवन	१८४ से १८६

दादा साहव का संकट मोचन इकतीसा-	१८६ से १९०
चारो दादा जी की स्तुति	१९१ से १९३
योगिराज शांति सूरि जी की स्तुति	१९३ से १९४
भैरव जी, भोमियाजी स्तुति देव देवीयाँ स्तुति	१९४ से १९७
शांति धारा पाठ	१९८ से २००
जिन पंजर स्तोत्र	२०१ से २०२
ग्रह शांति स्तोत्र	२०३
शांति नाथ जी का छंद	२०४ से २०५
दीवाली की जैन विधि से पुजन	२०६ से २१३
पद्मावती स्तोत्र गुरु प्रार्थना	२१४ से २२४

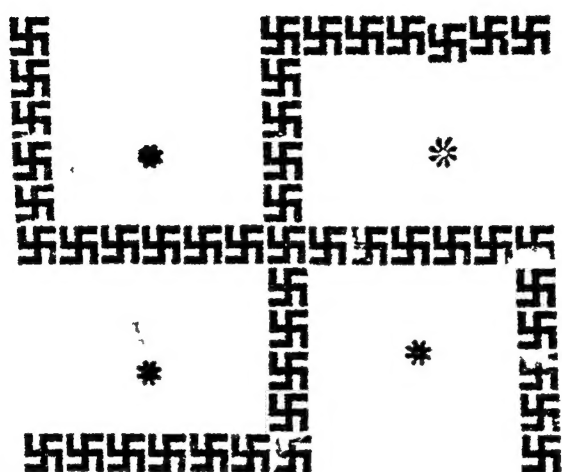
चित्र सूची

१. श्री भद्रावती पार्श्वनाथ त्रिरंगी
२. श्री दादागुरु देव
३. श्री पद्मावती
४. श्री क्षेत्रपालजी
५. श्री आदिनाथ जी (वाहर के मन्दिर में)
६. श्री मोतीलालजी व श्री चारित्र मुनिजी महाराज

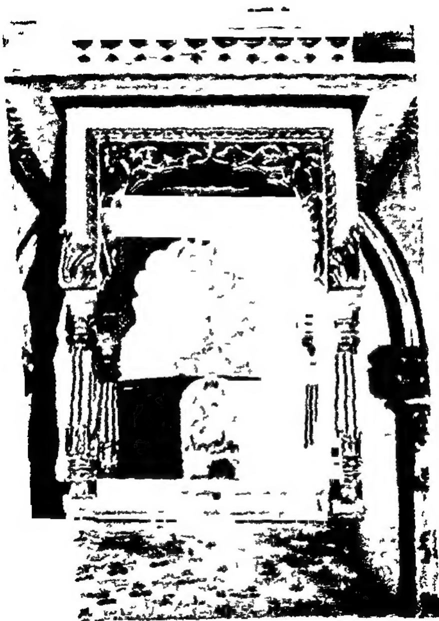


भारत के स्वप्न देव श्री भद्रावती पार्श्वनाथजी मु भांडक (महाराष्ट्र)

पूजा का पृष्ठ



श्रीभद्रावती पार्श्वनाथाय नमः
श्रीदादाजिनदत्तसूरिगुरुभ्यो नमः



श्री दादात्राडी मु भाडकजी (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना

हजारों वर्षों पूर्व श्यामकरण अश्वके लिए छोड़े गये भारतीय वीरो के युद्ध की साक्षी छह फुट ऊँची सप्तफणाधारी, मनमोहक अति ही सुन्दर श्री पार्श्वनाथ प्रभुकी अति प्राचीन महान चमत्कारिक यह प्रतिमा समय के फेरसे विहड़ जंगलके बीच झाडीमें जमीनमें गढी हुई थी जो आजसे ५५ वर्ष पूर्व अपूर्व चमत्कार दिखाते हुवे स्वपन द्वारा यहाँ पर प्रगट हुई है। तब से ही इस भद्रावती में रहे हुवे पुरातन तीर्थ का फिर से निर्माण हुआ है।

श्री पार्श्वनाथ प्रभुके प्रतिमाजी का प्रभावशाली और चमत्कारिक परचा, उनके अधिष्टायकों द्वारा अनेक जगह मिलते आया हैं, इसी लिये श्री पार्श्वनाथ प्रभु की बहुत ही बड़े प्रमाण में ख्याति और प्रसिद्धि है।

इस भव्य प्रतिमाजी के पूजन और दर्शन को दूर दूर के देश देशान्तरों से भी जैन, अजैन, नर नारी, साधु, साध्वी वगैरह अनेक महात्मा लोग हजारों की संख्या में आकर भाव भक्ति और श्रद्धा से यहा की यात्रा कर पुण्य उपार्जन करते हैं। इसी तरह मैं भी यहाँ पर प्रभु के यात्रार्थ प्रति वर्ष आया करता हूँ।

इस तीर्थधाम का संक्षिप्त इतिहास आगे लिखा है जिसे पूर्ण पढ लेने पर इस महान् तीर्थ की सारी जानकारी पाठको को सहज ही में हो जा सकती है।

प्रत्येक तीर्थो के स्थान, अपने मन और हृदय पटपर प्रभु भक्ति और वैराग्यमय भावनाओं का असर पैदा करते हुवे संसार की असारता का भान कराते हैं। जिससे इस भव बन्धन से मुक्ति पाने हेतु सहायता मिलती है।

आजसे चार वर्ष पूर्व यहा आने पर इस तीर्थ क्षेत्र के मन्त्री श्री सौभागमलजी कोठा ने मुझ से यह अनुरोध किया था कि कोई एक

सुन्दर रचना ऐसी तैयार कर देवें, जिसको पठन और मनन करने से, प्रत्येक मानव धर्म के रहस्यको सरलता से समझते हुवे मानव मात्र के हृदयपट पर प्रभु भक्ति में मस्त रहने की और अपना कर्तव्य पालन करने की प्रेरणा सदैव बनी रहे और इस भव बन्धन से मुक्ति पाने के लगन में ही वह सदा लगा रहे ।

इनके ऐसे भाव भरे अनुरोध के कारण, परमपुज्य भगवंत महा– वीर के बताये गये मार्ग का अनुकरण करने, जगत के महान आत्माओंने समय समयपर अपने वचनामृत द्वारा कई तरह की भावना प्रधान विचार-धाराओं का अमुल्य प्रवाह जो बहाया है, उसी को संग्रहित कर इस पुस्तिका के रूप में पाठकों के सामने रखा गया है ।

आशा ही नहीं मुझे पूरी उम्मीद है कि इस पुस्तक का पूरा पठन और मनन किया गया तो इस भव बन्धन से मुक्ति पाने का मार्ग बडे ही सरलता से पाठकों कि समझ में आजा सकेगा और इसको अपने आचारण में लाने से इस भव बन्धन से मुक्ति पानें और पूर्ण सुख प्राप्त करने में इनमे पूरी सहायता मिलेगी । इस लिये पाठकों से मेरा अनुरोध है कि वे इस पुस्तक का पूरा पठन करें मनन करें और वैसा आचरन भी ।

प्रेस कर्मचारियों के गलत समझ के कारण शब्दों में कहीं कहीं त्रुटियां भी रह गई है जिसके लिये खेद है पुस्तक पूरी छप जाने के कारण उसमे दुरुस्ति होना मुश्किल है। पाठक अपनी बुद्धि से या गुरु-गम से समझने की कोशिश रखें ।

आपका :

यति पं. महेन्द्रविजय, बडोदावाले

जैन ज्योतिषी और मंत्र शास्त्री

इस पुस्तक के पुनः प्रकाशन के विषय में

यह पुस्तक 'श्री भद्रावती तीर्थ परिचय'' बहुत साल पहले यतिवर्य प. महेन्द्र विजयजी बडौदावालोने भद्रावती तीर्थ के मंत्री श्री 'लोढाजी की सत्प्रेरणा से बडी मेहनत से तैयार कर प्रकाशित कराई थी। इन सालों में यह पुस्तक प्राप्त होना मुश्किल होगई थी। चूं कि पुस्तक तीर्थ परिचय के अलावा उसमें दिए गये स्तवन स्तोत्र मन्त्र भावनाओं के कारण बहुतही उपयोगी सिद्ध हुई थी। इससे प्रेरित होकर श्री इन्द्र चन्द जी वेद श्री राजनां गांव वाले के भाव ऐसे हुवे कि यह पुस्तक बहुत उपयोगी व चमत्कारिक है सो पुन. प्रकाशन, कराना चाहिए। उन्होंने इसको पुन प्रकाशित करने की अनुमति तीर्थ मंडल से लेकर यह पुस्तक अपने बड़े भाइसाब स्व भवरलालजी वेद का पुण्य स्मृति में प्रकाशित कराई।

अब प्रकाशन के लिए पुस्तक की जरूरत पडीतो वह मिली नहीं। बहुत जगह तलास करने पर व पुछपरछ करनेपर 'जीर्ण दशा में पुस्तक एक श्रीमान दुलाचन्द जी साहब बरडीया श्री राजनांदगांव वालों के पास मिली। उनकी इस पुस्तक पर बडी श्रद्धा थी व उन्हें भी इस पुस्तक से कई चमत्कार प्राप्त हुवे थे। श्रीमान दुलीचन्द जी साहब बरडीया रोज इसे श्रद्धा से पाठ करते थे इतनी श्रद्धा होने पर भी उन्होंने यह पुस्तक प्रकाशन हेतु दे दी।

पुस्तक प्राप्त होने पर इसे देखा गया तो यह पुस्तक पुरी व्याकरण व भाषा की त्रुटीओं से भरी थी। उसे यहा भरसक कोशिश कर के संशोधित कराई गई। संशोधन के समय करीब करीब तो मेटर वही रखा गया, भाषा में भी पू० यति जयंसी की ही भाषा रखी गई जो की पुरी हिन्दी नहीं होते हुवे भी बहुत मीठी है। इसमें कुछ स्तोत्र स्तवन वगेरह जो प्रचलित जैसे नहीं लग रहे थे उन्हें कुछ कम कर कुछ प्रचलित स्तवन स्तोत्र पाठ, मन्त्र बढ़ा दिए गए। जिससे पुस्तक का पुराना पन भी

कायम रहा व कुछ नया पन भी आया जिससे पुस्तक और सुन्दर हो व उपयोगी हो गई । फोटो भी जितने सुन्दर व नए मिल सके उतने लगाए है । कागज भी उँची जात का मेपलिथो का उपयोग में लिया गया ।

इतना होने पर भी मुद्रण दोष, भाषा व्याकरण दोष रह गया है तो पाठक गण क्षमा करेंगे, ।

जयभद्रावती पार्श्वनाथ की
जयदादागुरुदेव की

वीर सं. २५११ संवत्सरी
दिनांक ३०-८-१९८४

फोन० ३८४७४३
सरदारमल पाबुदान गोलछा
१४८४ नया माधुपुरा
अहमदाबाद-३८०००४

विनीत
मिलापचंद गोलछा

शिवमस्तु सर्व जगतः, परहितनिरता भवतु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ॥

प्रार्थना

अरिहंतों को नमस्कार श्री सिद्धों को नमस्कार,
आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार,
जग में जितने साधुगण हैं... (२) उन सबको वन्दु बार-बार

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन
सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराज . . .(२)
चन्द्र सुविधि शीतल श्रेयांस जिन,
वासुपूज्य पूजित सरताज .. (२)
विमल अनन्त धर्म जस उज्ज्वल
शान्ति कुन्थु अरह मल्लिनाथ, . (२)
मुनिसुव्रत नमि नेम पार्श्व प्रभु,
वर्धमान पद पुष्प चढ़ाव (२)
चौबिसों के चरण कमलों में . .. (२)
मेरा वंदन बार-बार . . अरिहंतों को

जिसने राग द्वेष कामादिक
जीते सब जग जानलिया .....(२)
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का,
निस्पृह हो उपदेश दिया (२)
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा,
या पैगम्बर हो अवतार. ... (२)
सबके चरण-कमल में मेरा .. (२)
वन्दन होवे बार बार . अरिहंतों को.

भलु थयु मैं प्रभु गुणगाया, वारी रसना नों फल लीधो रे ।
"देवचन्द्र" कहे म्हारा मननो, सकल मनोरथ सीधो रे ॥१॥

आज कृत पुण्य दीहम्हारो थयो, आज नर जन्म मैं सफल भाव्यो ।
"देवचन्द्र" स्वामि त्रेवीसमों वांदियो, भक्ति भर चित्त तुजगुण रमाव्यो ॥१॥

गढ गिरनारे जिण लह्युऐ, अमृत पद अभिराम ।
तास "क्षमा कल्याण" मुनि, निश दिन नमत कल्याण ॥१॥

सिद्ध चक्र पद सेवताऐं, सहज्ञानंद स्वरूप ।
अमृतमय "कल्याण" निधि, प्रकटे चेतन भूप ॥१॥

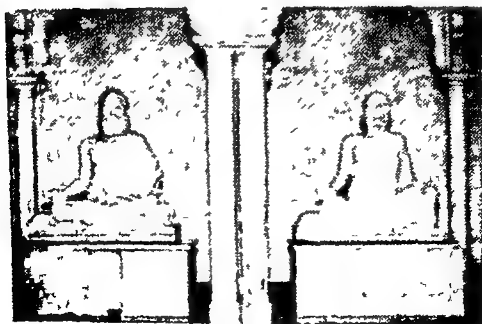
पूरव विदेह विराजताए श्रीसीमंन्धर स्वाम ।
त्रिकरण शुद्धि तिहुँ काल में, नित प्रति करु प्रणाम ॥१॥

अहो ! अहो ! श्री सद्गुरु, करूणा सिन्धु अपार,
आ पामर पर प्रभु कर्यो, अहो ! अहो ! उपकार ॥
शु प्रभु चरण कने धरु, आत्मा थी सोहीन ।
ते तो प्रभु ए आपीओ, वर्तु चरणा धीन ॥
आ दे हादि आज थी; वर्तो प्रभु आधीन ।
दास दास हुँ दास छु; आप प्रभु नो दीन ॥

षट स्थान क समझावी ने, भिन्न वताव्यो आप ।
म्यान थकी तलवार वत् ए उपकार अमाप ॥
जे स्वरुप समझ्या बिनां पाम्यो दुःख अनंत ।
सम जाव्यु ते पद नमु, श्री सद्गुरु भगवंत ॥
परम पुरुष प्रभु सद्गुरु; परम ज्ञान सुखदाम ।
जेणे आप्यु भान निज; तेने सदा प्रमाण ॥
देह छंता जेनी दशा; वर्ते देहातीत ॥
ते ज्ञानी ना चरण मां, हो वंदन अहोनीस ।



श्री आदिनाथ मन्दिर का प्रतिमा जी



स्व. श्री मोतीलालजी महाराज व उनके शिष्य
श्री चारित्र मुनिजी महाराज



श्री पद्मावती माता



श्री अधिष्ठायक श्री भैरवजी (क्षेत्रपालजी महाराज)

जैन तीर्थ भद्रावती

स्थान एवं मार्ग निर्देश

पचास–साठ साल पहले जो सिर्फ एक अनामसा भादक स्टेशन था, वह आज भारतभर में प्रसिद्ध पवित्र जैन तीर्थ "भद्रावती" के रूप में विख्यात हो चुका है और समय की परतों को चीरकर उसका प्रकाश अधिकाधिक फैलता जा रहा है। दिल्ली से मद्रास जानेवाली रेल्वे के ग्रैंड ट्रंक रेल मार्गपर वर्धा के आगे तथा चन्द्रपुर के कुछ मील पहले जो भादक नामक रेल्वे स्टेशन आता है, वही आज का भद्रावती है। दिल्ली से काजीपेठ–मद्रास जानेवाली तथा वर्धा से बल्लारशाह जानेवाली रेल गाड़ियाँ इस स्टेशन से गुजरती है। वर्तमान महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ विभाग में चन्द्रपुर जिले में भद्रावती का समावेश होता है। भद्रावती चन्द्रपुर (चान्दा) से १६ मील, वर्धा से ६५ मील, नागपुर से ८० मील, वणी से २६ मील और हैदराबाद से करीब २५० मील है।

भादक स्टेशन के बोर्डपर भादक के नीचे ही "भद्रावती पार्श्वनाथ" का उल्लेख किया गया है। महाराष्ट्र राज्य परिवहन (स्टेट ट्रान्सपोर्ट) की बसे दिन में कई बार वहाँ पहुँचती है। स्टेशन से मंदिर की दूरी १ मील है, परन्तु बस स्टैण्ड से तो वह पास ही है। संघ की ओर से रेल्वे स्टेशन पर हर गाड़ी पर यात्रियों को मंदिर ले जाने के लिए रिक्षा बैलगाड़ी आदि वाहन रखे जाते हैं।

भव्य मनोरम अतीत

भद्रावती में पुराने तालाबों, बावड़ियों तथा कुओं की संख्या लगभग १०० है। कई खन्डहर, कई मूर्तियाँ कई शिल्प यत्रतत्र

बिखरे हुए आज भी दृष्टीगोचर होते हैं । स्वयं भगवान पार्श्वनाथ की जो प्रतिमा मंदिर में प्रतिष्ठापित है, कहते हैं वह २३००–२४०० साल पूर्व की है । इसके पुरानी होने का अर्थ है, भद्रावती को जैन युग के अत्यन्त प्रारम्भिक काल में तीर्थ स्थान के रूप में माना जाने लगा था । भद्रावती के आसपास जो और मूर्तियाँ मिली हैं, एवं वहाँ जो तालाब, बावडियाँ और कुऍं हैं, उनसे सिद्ध होता है कि भद्रावती प्राचीन काल में एक सुन्दर संस्कृति का केन्द्र था ।

महाभारत एवं जैमिनी कथासार में एक भद्रावती का उल्लेख आया है । उस भद्रावती के राजा युवनाश्व के पास श्यामकर्ण अश्व था । धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय (या अश्वमेध) यज्ञ में अश्वमेध के लिए श्यामकर्ण अश्व की आवश्यकता थी । तब वे अपने सहचरों-मेघवर्ण तथा कृष्णकेतुके साथ भद्रावती आये थे और राजा के न मानने पर युद्ध में उसे हराकर श्यामकर्ण को ले गये थे । बहुत संभव है कि भद्रावती, आज का भांदक ही हो ।

ऐतिहासिक युग में कलिंग देश के जैन सम्राट खारवेल का नाम आता है । सम्राट खारवेल की रानी भद्रावती की राजकन्या थी । कुछ इतिहासकारो की यह भी मान्यता है कि मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त, कौटिल्य (प्रसिद्ध आचार्य चाणक्य) के चले जाने के बाद जैन धर्म के प्रभाव मे आ गये थे । सम्राट चन्द्रगुप्त के साथ एक बार जैन आचार्य भद्रबाहु स्वामी दक्षिण में पधारे और वर्तमान भद्रावती के शाँत मनोरम परिसर को देखकर यहाँ की गुफाओं में रहकर उन्होंने आत्म–साधना एवं तपश्चर्या करनी शुरू की ।

बुद्ध–धर्म के अनुयायी चीन के प्रसिद्ध साधक यात्री हयुयेनसुंग ने अपने प्रवास–वर्णन में भद्रावती एवं वहाँ के राजा का उल्लेख किया है । वे लिखते हैं, "भद्रावती का राजा क्षत्रिय है, वह अत्यन्त

विद्याप्रेमी, कलाप्रेमी एवं बड़ा धार्मिक है। वहाँ पर सैकड़ों बड़े बड़े मठ हैं, एक एक मठ में हजारों ऋषि मुनि रहते हैं। वह नगरी सैकड़ों मंदिरों एवं विद्यालयों से सुशोभित है। यहाँ काफी संख्या में विद्यार्जन करनेवाले स्नातक वास करते हैं।

भद्रावती एवं उसके आसपास के प्रदेश पर मौर्य, गुप्त, आन्ध्र, राष्ट्रकूट, चालुक्य और वाकाटक वंशों का आधिपत्य रहा। काफी बाद में उस पर कई दिनों तक चांदा की गोंड राजाओं ने राज्य किया, बाद में उस पर नागपुर के भोसलों की भी अधिसत्ता थी। एक छोटी लड़ाई में अंग्रेजों ने भोसलों से यह प्रदेश सन् १८१८ में छीन लिया था। परन्तु भद्रावती का प्राचीन वैभव इससे कई सदियों पहले लुप्त हो गया था। जो कभी विद्या और संस्कृति का केन्द्र था, वह श्री-हीन होकर विस्मृति की गोद में सो गया। वैभव खण्डहरों में बदल गया, शिल्प एवं वास्तु अस्त-व्यस्त होकर टूट-फूट गये। समय के प्रवाह में भद्रावती अंग्रेजी राज में भांदक नामक एक छोटा उजड़ा सा स्टेशन भर रह गया। और वहाँ गाँव के नाम पर थे चंद झोंपड़े। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मंडल के प्रयासों के फलस्वरूप महाराष्ट्र शासन ने इसे पुनश्च "भद्रावती" नाम से प्रतिष्ठित किया।

स्वप्न संकेत

भद्रावती के पुनरुत्थान की कहानी एक अद्भुत स्वप्न से जुड़ी हुई है। आकोला के पास सिरपुर में "श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ" का मंदिर है। श्री चतुर्भुज भाई उस मंदिर-संस्था के व्यवस्थापक थे। विक्रम संवत १९६६ की माघ शुक्ल ५ सोमवार की रात को उन्हें जो स्वप्न आया, उसका वर्णन "प्रगट प्रभावी पार्श्वनाथ" नामक किताब में अहमदाबाद के श्री मोहनलालजी झवेरी ने निम्नानुसार किया है–

"श्री चतुर्भुज भाई जंगल में घूम रहे हैं। इतने में उनके पीछे एक दस हाथ लम्बा काला नाग चल पड़ा। चतुर्भुज जी जहाँ जहाँ जाते हैं, वहाँ वहाँ नाग भी उनके पीछे पीछे जाता है। आखिर वे घूमते घूमते थक गये, परन्तु नागराज ने उनका पीछा नहीं छोडा। तब उन्होंने नाग से विनती की, " हे नागराज, मैंने तुम्हारा कोई अपराध तो किया नहीं, फिर आप मेरे पीछे क्यों पडे हैं?' नाग ने मनुष्य की बोली में कहा। "मैं तुझे कुछ चमत्कार बताऊँ, तू पाँच सौ रुपये खर्च कर"।

"आप कहते तो ठीक हैं, लेकिन मैं तो कंगाल हालत में हूँ, चाकरी करके उदर पोषण करता हूँ, पाँच सौ रुपये कहाँ से लाऊं?" उसने जवाब दिया। नाग ने पूछा "क्या तू इतने रुपये खर्च नहीं कर सकता?"

"मै सच कहता हूँ, अभी मेरे पास कुछ नहीं है" उसने कहा। "अच्छा तो तेरे पीछे देख" नागराज ने कहा। चतुर्भुज भाई नाग की इस बात को सुनकर मन में बहुत घबराये की यदि मैंने नजर पीछे घुमाकर देखा तो नाग मुझे डस लेगा। फिर भी उन्होंने डरते डरते पीछे देखा, तो आश्चर्य, जहाँ वे खडे थे, वहाँ जंगल नहीं था, एक बडा नगर था। उन्हें सामने पश्चिम मुखी मंदिर में श्री पार्श्वनाथ प्रभु की पीले रंग की प्रतिमा दिखाई दी। तुरंत वह भगवान की स्तुति करने लगे।

नागराज ने उस बीच में कहा–"देख, यह भद्रावती नगरी और केसरिया पार्श्वनाथजी का बड़ा तीर्थ है जो अभी विच्छेद है। इस तीर्थ का उद्धार करने का तू प्रयत्न कर"।

नागराज के अदृश्य होते ही उनकी आंखें खुल गईं।

स्वप्नदेव से साक्षात्कार

उपर्युक्त स्वप्न के बाद स्वाभाविक ही श्री चतुर्भुजभाई के मन में सपने की जाच पडताल की बात जोर करने लगी । वे चार दिन बाद यानि माघ सुदी ९ को आकोला से रवाना हुये और भादक पहुँचे । वहाँ उन्हे बताया गया कि प्राचीन भद्रावती यहां भादक है । तब वे आसपास की झाडियों में स्वप्न-प्रतिमा को ढूढने लगे । ढूढते-ढूढते उन्हें स्वप्न में दिखी पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के दर्शन हुये । प्रतिमा जैसी सपने में देखी थी वैसीही थी । फर्क इतना ही था कि जहाँ सपने में प्रतिमा मंदिर में स्थापित दिखी थी, तो यहाँ वह प्रत्यक्ष में जमीन में आधी गडी किंचित झुकी सी दिखाई दे रही थी और उसके चारों ओर आर्कियालॅजिकल डिपार्टमेन्ट का घेरा था और उस पर "संरक्षित पुराणचिन्ह" का बोर्ड लगा था । चतुर्भुजभाई के पहले चांदा के चर्च के एक विद्याव्यसनी पादरी को वह मूर्ति घूमते घूमते दिखाई दी थी और उन्हीं की सूचना पर ब्रिटिश सरकार के आर्कियालॅजिकल डिपार्टमेन्ट ने उसे अपने संरक्षण में ले लिया था ।

जब चतुर्भुजभाई ने अपने स्वप्न की प्रतिमा को साक्षात देखा तो वे भाव विभोर हो गये । प्रतिमा छ फुट ऊंची, नागके सप्तफणों से गधित, अर्धपद्मासनस्थ थी । उसका रंग गेरुआ था ।

प्रतिमा की प्राप्ति व प्रतिष्ठा

स्वप्न में दिखी श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा को खोज लेने के बाद श्री चतुर्भुजभाई चांदा आये और वहाँ के श्री संघ को अपने स्वप्न एवं खोज का वृत्तान्त निवेदित किया । तब, चांदा में मुनिराज श्री सुमतिसागरजी महाराज विराजते थे । सारा वृत्तान्त

सुनकर चाँदा का श्री संघ और मुनिराज सुमतिसागरजी भांदक आये। मुनिमहाराज ने प्रतिमाजी को देखकर तथा अन्य चीजों का निरीक्षण कर आदेश दिया कि यह प्रतिमा तेवीसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी की है और यह स्थान प्राचीन तीर्थक्षेत्र भद्रावती है, इसलिए जीर्णोद्धार का कार्य शुरू करवाकर इस तीर्थ एवं प्रतिमा को पुनर्स्थापित सुप्रतिष्ठित किया जाय।

तदनुसार स्वर्गीय श्री सिद्धकरणजी गोलेच्छा, अध्यक्ष जैन श्वेतांबर सभा चाँदा निवासी ने चाँदा जिल्हे के डिप्टी कमिश्नर के माध्यम से इस दिशा में प्रयत्न शुरू कर दिये। परिणामस्वरूप १-४-१९१२ को स्व. श्री सिद्धकरणजी और सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया के बीच एक करारनामा सम्पन्न हुआ, जिसके द्वारा सरकार ने प्रभु पार्श्वनाथ की प्रतिमा एवं जिस भग्न पुरातन मंदिर में वह पाई गई वह मंदिर की मालकियत और कब्जा स्व. श्री सिद्धकरणजी अध्यक्ष जैन श्वेतांबर सभा के नाम हस्तांतरित किया।

और १-४-१९१२ को ही एक अन्य करारनामे के जरिये सरकारने रयतवारी गांव मौजा बुटकाला तहसिल वरोरा जिल्हा चांदा के सर्वे नंबर १ मे की २१.५० एकड़ जमीन मंदिर एवं परिसर के निर्माण हेतु नाममात्र महसूल पर दी। और इसी जगह पर प्रभु पार्श्वनाथ का मुख्य जिन मंदिर आज विद्यमान है।

मंदिर निर्माण के साथ ही आनेवाले यात्रियों के लिये धर्मशालाएँ अन्य मंदिर आदि का भी निर्माण करना था। उपरोक्त जमीन से लगकर ही तत्कालिन मालगुजारी गांव भांदक की सरहद लगी हुई है। अतएव तत्कालिन जैन श्वेतांबर सभा के सेक्रेटरी स्व. श्री हिरालालजी फत्तेपुरिया ने तत्कालिन मालगुजार से १९१२ में एक रजिस्टर्ड

बक्षिसपत्र द्वारा २०० फुट लम्बी पूर्व पश्चिम और १०० फुट चौड़ी उत्तर दक्षिण जमीन प्राप्त की ।

१९१३ को फिर एक बक्षिस पत्र द्वारा उन्हीं मालगुजारों ने १९१२ में दी हुई जमीन से लगकर आगे की पूर्व पश्चिम लंबी २०१ फुट और उत्तर दक्षिण चौड़ी ४०१ फुट जमीन और दी ।

१९१४ को अन्तिम रजिस्टर्ड बक्षिसपत्र द्वारा उन्हीं मालगुजारों ने सेठ श्री हीरालालजी की प्रार्थना पर फिर १९१३ में दी गई जमीन के आगे पूर्व पश्चिम लम्बी १९१ फुट और उत्तर दक्षिण चौड़ी ४०० फुट जमीन दी ।

इन तीनों बक्षिस पत्रों द्वारा दी गई जमीन १९०२ के सेटलमेंट नक्शे में खसरा नंबर [illegible] में दिखाई गई है । १९१८–१९ में पुनश्च सेटलमेंट हुआ और रिनवरिंग पर्चे के मुताबिक मंदिर के कब्जे में उस वक्त ४९६।३ और ४९७ और इन दोनों नंबरों की कुल आराजी करीबन ६५० एकड़ है ।

आज जितनी भी धर्मशालाएँ, बावड़ियाँ, फुलबाग, श्री ऋषभदेव मंदिर, श्री दादागुरुदेव मंदिर, श्री मोतीलाल महाराज का मंदिर, भोजनशाला, पेढ़ी, दफ्तर, परकोटे के बाहर की धर्मशाला, औषधालय सामने का बंगला, पश्चिम में प्रथम प्रवेश द्वार के पास की कर्मचारियों की [illegible], गौशाला आदि, और इस क्षेत्र में की सारी खुली जमीन है यह सब "[illegible]" के मालिकियत की है ।

जैसे जैसे उपर मुख्य जमीन प्राप्त होती गई वैसे वैसे मंदिर, उपाश्रय, धर्मशालाएँ आदि का निर्माण कार्य भी तेजी से होने लगा । सारे देश के दानवीर साधर्मी बन्धुओं ने मुक्त हस्त से तीर्थ के पुनर्निर्माण के लिए अविरत संपत्ति का प्रवाह बहा दिया ।

संवत १९७६ की फाल्गुन शुद्ध तृतिया यह शुभ दिन प्रतिष्ठा के लिए निश्चित किया गया । प्रतिष्ठा के आठ दिन पूर्व से मूलनायकजी को वेदीपर विराजमान करनेके लिय घो की बोली शुरू कर दी गई थी । प्रतिष्ठा के ४ दिन पूर्व इतनी विशाल मूर्ति कैसे उठाकर रखी जायगी, यह जानने के लिये १५–२० व्यक्तियों ने प्रतिमाजी को उठाकर देखने की कोशिष की । किन्तु प्रतिमा एक सूत भी नहीं हिली ।

यह देखकर उपस्थित लोगों में निराशा की लहर दौड़ गई । महामंत्री श्री हीरालालजी फत्तेपुरया. आचार्य श्री जयमुनीजी, आदि विशेष रूपसे चिन्तित थे। यदि प्रतिमाजी उठाकर रखी नहीं जा सकती, तो इतने परिश्रम और व्यय से निर्माण किये गये मंदिर का क्या उपयोग ?

काफी विचार विमर्श के बाद आचार्य जयमुनि, महामंत्री श्री हीरालालजी और पुजारीजीने तेले की (तीन उपवास) तपश्चर्या प्रारंभ की और प्रभु पार्श्वनाथ से अनुनय की, "हे प्रभो, हमें संकेत दीजिये, किस प्रकार आपको उठाकर नवनिर्मित वेदीपर विराजमान करें ?"

प्रभु ने तपस्वीयों की प्रार्थना मानों स्वीकार कर स्वप्न संकेत दिया की चार अविवाहित कुमारिकाएँ प्रभु पार्श्वनाथ की प्रतिमा को मूल स्थान से उठाकर नवनिर्मित वेदीपर विराजमान कर सकती है । सकेत पाकर पूज्य जयमुनिजी, स्व. श्री हीरालालजी फत्तेपुरीया और पुजारोजी हर्षित हो गये, और प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न कराने के तयारी में दिनदुगने उत्साह से जुट गये ।

"क्या चार कुमारिकाएँ इतनी विशाल और इतनी वजनदार प्रतिमाजी उठा सकेगी ?" यही कुतुहल भरा प्रश्न जनसमुह के मन को उत्कंठित कर रहा था । सभी की दृष्टि कभी प्रभु के प्रतिमाजी की ओर, और कभी रिक्त नवनिर्मित वेदी को ओर खिच रही थी ।

और भी एक व्यक्ति थी जिसकी ओर सारोही जनसमूह जहीहीं उत्सुक-ता-भरी और आशा भरी दृष्टिसे निहार रहा था-"जय मुनि" ।

आह्वानित चार कुमारिकाएँ मूल जिन प्रसाद में पहुच गई, और जय मुनिजी द्वारा निर्दिष्ट स्थानपर प्रतिमाजी के आजू बाजू खड़ी हो गई । जय मुनीजी ने उन निर्मल मन की पवित्र बालिकाओं को कुछ सूचनाएँ दी और फिर प्रगट रूपसे प्रभु पार्श्वनाथ की स्तुति की ।

ज्योंहि मुनीजी का आदेश हुआ, बन्धुओं, एक चमत्कार हुआ, चारों बालिकाओंने प्रभु पार्श्वनाथ को ऐसे उठाकर वेदीपर विराजमान कर दिया, मानो वे प्रतिमा नहीं एक फोटो उठाकर रख रही हो । और असंख्य करतल ध्वनी, मंगलगान, मंत्रोच्चार, घंटनिनाद, और जयघोष के बीच शुभ वेला में प्रभु पार्श्वनाथ पुनर्प्रतिष्ठित किये गये ।

भद्रावती संबंधी पूर्व पुस्तकों में इस चमत्कारिक घटना का उल्लेख न होनेसे पाठकों को शक होना स्वाभाविक है कि यह दन्तकथा कहा से टपक पड़ी । औषधालय के सामने के बंगले के मालकियत के संबंध में जो विवाद चल रहा है, उसके सिलसिले में हम लोग छिंदवाड़ा स्वर्गीय श्री गुलाबचंदजी वैद, इन्कमटॅक्स ॲडव्हाइजर की गवाह लेने गये थे । हमारे साथ चांदा निवासी श्री ग्यानचंदजी कोठारी भी थे, और हमे उन के अन्य पारिवारिक लोगों के समक्ष ८१ वर्षीय महर्षि गुलाबचंदजी ने भद्रावती संबंधी जो अनेक संस्मरण सुनाये, उनमे सबसे प्रमुख यही था ।

अतीत की घटनाओं को साधक होकर देखना, आजके संदर्भ में जरा भी आश्चर्यजनक नहीं है । पर हाथ कंगन को आइने की क्या जरूरत ? आज भी मूल जिनालय मे प्रभु पार्श्वनाथ के सन्मुख जो अखंड घृतदीप सदैव प्रज्वलित रहता है, उसका काजल काला नहीं,

बल्की केशरिया रंग का गिरता है, ये कोई भी अपनी निगाह से देख सकता है। और इसीलिये भद्रावती पार्श्वनाथ को केशरिया पार्श्वनाथ कहते हैं।

नवोदित तीर्थ की विधिवत प्रतिष्ठापना के बाद उस समय के कल्पक व योजक महमंत्री स्व. हीरालालजी फत्तेपुरीया तीर्थ के विकास हेतु फिर कार्यमग्न हो गये। इस भव्य तीर्थ के मंदिर के अनुरूप इस तीर्थ का परिसर भी नयनरम्य, मनमोहक और शांतिदायक हो इस उद्देश से उन्होंने तत्कालीन अंग्रेज सरकारसे और अधिक जमीन के लिए अर्ज किया। फलत: २८–११–१९२० को एक करारनामे के जरिये सरकारने इस तीर्थ को मौजा भुटकाले को सर्व्हे नंबर ११:२ (पुराना ७:१) में की २४ एकड जमीन मय एक पुराने कुंवे के बाग बगीचे तत्काल लगाने के शर्त से दी।

२२ जुलाई १९२१ को सोसायटीज रजिस्ट्रेशनमें ॲक्ट १८६० के अन्तर्गत "श्री जैन श्वेतांबर मण्डल" भांदक नामक संस्था इस तीर्थ के संचालन हेतु रजिस्टर की गई। एक लिखित विधान बनाया गया, जो ६ जुलाई १९५८ को संशोधित किया गया। संशोधित विधान के अनुरूप ही मंडलद्वारा इस तीर्थ का संचालन किया जा रहा है।

बडे मजे की बात यह है कि पार्श्वनाथजी की जो प्रतिमा आज भद्रावती मंदिर में प्रतिष्ठित है तथा जिसकी वजह से छोटा सा भांदक भारतभर में प्रसिद्ध तीर्थ भद्रावती में परिणित हो गया है, उस प्रतिमा को पहले पाया एक ईसाई धर्म गुरुने और आज जो उस जंगल में साक्षात मंगल दृश्य दिखाई देता है। उसका भी बहुत कुछ श्रेय एक ईसाई राज्याधिकारी विदेशी महानुभाव सर फ्रेंक स्लाय को ही है। इतना ही नहीं, जिस सरकार का धर्म भारतीय धर्मों में से जैन, बुद्ध,

हिन्दू कोई भी नहीं था, जो सरकार ईसाईयत को राजधर्म मानती थी और सपूर्ण रूप से विदेशी थी, उसीके कार्यकाल में तथा सहयोग से इस तीर्थ की पुनर्स्थापन एवं पुनर्प्रतिष्ठा सभव हुई, यह दैवयोग है या चमत्कार ?

भारत के स्वप्नदेव

स्व श्री हीरालालजी फत्तेपुरिया तथा स्व श्री सिद्धकरणजी गोलेच्छा के भगीरथ प्रयत्नों से भद्रावती तीर्थ का पुनर्निर्माण सवत १९६९ मे शुरू हुआ । यह घटना इतनी रोमाचकारी एव अभिनव थी कि उससे अभिभूत होकर एक चाटा के विदेशी व विधर्मी पुलिस अधिक्षक श्री मिडल्टन स्टुअर्ट को कलम ने ६ जुलाई १९२४ के टाइम्स ऑफ इण्डिया में भाव विभोर-होकर लिखा ।

DREAM GOD OF INDIA

By C Middliton Steuwart

Found by a Bishop of the church, and traced through a dream by the brother of a marwari Cotton Broker, PARASNATH once again gazes inscrutably before him, whilst around him, and on the site of his ancient shrine, is arising a temple, towards the magnificence and adornment of which the wealth of the JAIN Community of India is being pour-d out with lavish hand

For centuries he slept amidst the dust and ruins of forgotton fanes in ancient Bhadravati bowing before the edicts of Ashok, he surrendered to the call of the

Gautama, and mothe earth, who first bared her bosom for the old deliefs, mercifully took into her shrounded embrace the neglected image.

The God which thousands of year before had seen that fierce conflict of the Mahabharat heroes for the possession of the Shyam Karma steed, to its doctrine of meekness, prepared for slumber, lulled by the distant chanting of monks in their rock hewn cells.

And PARASNATH biding his time, slept.

Today, if those pious monks of Asoka,s time, could revisit the scene, they would find the silence of desolation and the jungle where once their monasteries stood. They would fin d the blackness of a thousand nights concealing the seated Budha in the caves of Wijasan-his only attendants the bat.

Gone tne great city of their day, qone the Sangharams and colleges of their learning. But the temple of Parasnath, ruined though it be, still stands. Parasnath despised, neglected and forgotton then, stirs in his sleep now, and from the hushed gloom of his ruined abode comes the clang of bell and the mystic murmer of the Sanskrit Mantras.

To this day, the jungle and open spaces under cultivation yields to the plough, intereting relies of a bygone civilization It was in soma such fortuitions way that the head of the scottish Mission in chaenda discovered tha statue of Parasnath. It lay in a tangle of weeds half buried in the earth, but partially protected by the tram-

pled down remains of an old temple. It was removed and placed in a shed and declared a protected Manument by Government

The Times of India
Illustrated weekly
july 6th 1924

भारत के स्वप्नदेव

चर्च के बिशप द्वारा पाए गए और एक मारवाड़ी रुई के दलाल भाई द्वारा खोजे गये 'पारसनाथ' फिर से एक बार अपने सामने निहारते हैं। उनकी पुरातन प्रतिमा के स्थान पर उनके चारों ओर एक मंदिर उठ रहा है और उसकी भव्यता एवं सजावट के लिये भारत के संपूर्ण जैन-संप्रदायका पैसा मुक्त हाथों से खर्च किया जा रहा है। सदियों तक वे (पार्श्वनाथ) पुरातन भद्रावती के खंडहरों में विस्मृत, धूल के बीच सोये हुए थे। अशोक के आदेशों के आगे सिर झुकाकर गौतम की पुकार पर वे एक तरफ हट गये थे और जिस धरती माता ने बुद्ध-पूर्व विश्वासों एवं मान्यताओं के लिए सर्वप्रथम अपना हृदय अनावृत किया था, उसी धरतीमाता ने कृपा पूर्वक इस विस्मृत प्रतिमा को अपनी गोद में छिपा लिया।

भगवान पार्श्वनाथ ने हजारों साल पहले अपने नम्रता के दर्शन के मुकाबले में श्यामकर्ण अश्व पर अधिकार के लिये महाभारत कालीन खूंखार संघर्षों को देखा था और देखकर सुदुग्धवती गिरी कंदराओं में स्थित साधुओं के स्तुतिगीतों के बीच सोने की तैयारी की थी। अपने समय का इंतजार करते हुए पारसनाथ सोते रहे।

आज यदि अशोक युग के पवित्र साधु फिर से आयं तो उन्हें उनके रवगुंजित विहारों की जगह वीरानगी की चुप्पी और जंगलों का सन्नाटा दिखाई देगा। वे पायेंगे कि विंझासन की गुफाओं में बैठे हुए बुद्ध को हजार रातोंका कालिमा अपने आगोश में छिपाये हुये हैं और उनकी सेवामें है, सिर्फ चमगादड़।

उनके जमाने की वह भव्य नगरी लुप्त हो गयी, उनके विद्याके वे संघाराम और विद्यापीठ नष्ट हो गये, परन्तु पारसनाथ का मंदिर खंडहर स्थिति में ही क्यों न हो आज भी खड़ा है। तब के अवमानित दुर्लक्षित एवं विस्मृत पारसनाथ अब नींद में से कसमसाने लगे हैं और खंडहर बने उनके स्थान की वीरानगी से मधुर घंटानाद तथा संस्कृत मंत्रों की गूढ ध्वनियाँ उभरने लगी है।

आज अभी तक यहाँ के जंगलों के नीचे की खुली जमीन एक बीती हुई सभ्यता के दिलचस्प चिन्हों को उद्‌घाटित करती रहती है। ऐसी ही एक घटनामे चांदा के स्कॉटिश मिशन के प्रमुख ने पारसनाथ को प्रतिमा को पाया। वह प्रतिमा धरती में दबी, जंगली झंखाडों में उलझी अपने ही मंदिर के अवशेषों से आंशिक रूपेण सुरक्षित पडी हुई थी। वहाँ से उसे हटाकर एक शेड में रखा गया और सरकार द्वारा संरक्षित पुरातत्त्व स्मारक के रूप में विज्ञापित किया गया।

प्राचीन अवशेष

१. श्रीआदिनाथ भगवान :

भद्रावती ही में निकली हुई २ फीट ऊंची प्रथम तीर्थंकर श्री-आदिनाथ भगवान की मनोहर प्रतिमा थी। इस प्रतिमा का लेप

करवाकर श्री अतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ सिरपुर अंजनशलाका के लिये भेजी थी। गतवर्ष ही इस प्रतिमाजी को भद्रावती वापिस लाया गया। कुछ खरोंच लग जाने से उदयपुर के श्री हरीशंकर शर्मा द्वारा फिरसे लेप करवाया गया। और मंडल इस प्रतिमा जी को प्रतिष्ठित करने का विचार कर रहा था।

अक्टूबर ७४ के एक दिन सतना से एक पारखजी का फोन आया। "आदिनाथ भगवान भद्रावती में है, वहाँ से आप मूलनायकजी के रूप में यहाँ (सतना में) विराजमान करने के लिए लायें ऐसा स्वप्न संकेत मिला है", उन्होंने कहा और पूछा कि श्री आदिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा वहाँ है क्या?

यहाँ प्रतिमाजी है, ऐसा मालूम होते ही वहाँ के मंच प्रमुख श्री चुन्नीलालभाई जीवराजजी पारख, एवं चार अन्य सज्जन यहाँ पधारे, उन्होंने जो वृत्तान्त कहा उसका सार कुछ इस प्रकार है–

"सिकंदराबाद से सम्मेत शिखरजी का पदयात्रा संघ दो वर्ष पूर्व जब यहाँ आया था, तब हम लोग भी आचार्य महाराज और संघपतिजी से रास्ते में सतना पधारने की विनंती करने के लिये यहाँ आये थे। पूज्य आचार्य महाराज की अनिच्छा देखते हुए, हम लोगोंने आचार्य महाराज से अनुरोध किया की हमारी इच्छा सतना में एक जिनमंदिर बनवाने की है, यदि आप पधारें तो आपके ही करकमलों द्वारा शिलान्यास कराने का विचार है"।

"पूज्य आचार्य महाराज से स्वीकृति मिलते ही हम प्रभु पार्श्वनाथ के सन्मुख गये और प्रार्थना की, हे प्रभो, सतना में जिनमंदिर बनाने की हमारी भावना है, कारण वहाँ, ६०–७० मील के एरिया में कोई जिनमंदिर नहीं है। और हम तो केवल ३०–३५ परिवार

सतना में रहते हैं, तो हमारा मनोरथ और संकल्प पूरा करने में हमारी सहायता करें" ।

"सतना वापिस पहुँचते ही शहर के प्रमुख स्थान की गोद से लगी हुई जमीन हमे मिल गई । रातदिन हमारे नवयुवकों ने मेहनत कर उस जमीन पर के जुने मकानात आदि गिराकर जमीन बिल्कुल साफ कर दी, और पूर्वनियोजित तिथी को पदयात्रा संघनायक आचार्यश्री के करकमलोंद्वारा शिलान्यास विधि संपन्न करा दी गई" ।

"सतना श्री संघ ने श्री आदिनाथ भगवान के नाम पर शिलान्यास किया था । और श्री संघ ने मंदिर निर्माण हेतु निधि एकत्रित करना आरंभ किया । निधि का प्रवाह, क्या गांव से और क्या परगांव से, इस प्रकार आना शुरू हुआ कि देखते ही देखते दो वर्षों के अल्प समय में सात लाख रुपया लगाकर संगमरमर का भव्य जिन मंदिर तैयार हो गया" ।

"हमारी भावना थी कि मूलनायकजी के रूप में तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा विराजमान करें । अहमदाबाद गये, सेठजी कस्तुरभाई से मिले, और बहुत से प्राचीन तीर्थ घूमे, कलकत्ता तक जाकर आये, लेकिन प्राचीन मूर्ति हमें नही मिली"।

"सतना वापिस आने पर हमारे एक भतीजे ने मनोमन संकल्प किया, हे पार्श्वनाथ प्रभु, हमे निश्चित संकेत बतावें कि हम प्रभु श्रीआदिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा कहाँ से प्राप्त करें, तबतक मैं शक्कर घी आदि ग्रहण नहीं करूँगा" ।

"सातवे या आठवे दिन प्रातः उसे स्वप्न आया । देखता है भद्रावती मंदिर का प्रवेशद्वार और उस पर स्थित कमल में नाग देवता ।